स्कंद षष्ठी व्रत कथा

पौराणिक कथाओं के अनुसार, राजा दक्ष के यज्ञ में माता सती के भस्म हो जाने के बाद भगवान शिव वैरागी हो गए और तपस्या में लीन हो गए, जिससे सृष्टि शक्तिहीन हो गई। इसके बाद राक्षस तारकासुर ने देवलोक में अपना आतंक फैला दिया और देवता पराजित हो गए। धरती हो या स्वर्ग, हर जगह अन्याय और अनैतिकता का बोलबाला हो गया।

इससे परेशान होकर देवताओं ने तारकासुर के अंत के लिए ब्रह्माजी से प्रार्थना की। इस पर ब्रह्माजी ने बताया कि शिव का पुत्र ही तारकासुर का अंत कर पाएगा। तब सभी देवताओं और इंद्र ने शिव को ध्यान से जगाने का प्रयास किया और इसके लिए उन्होंने भगवान कामदेव की भी मदद ली। कामदेव ने अपने बाण से शिव पर पुष्प फेंके, ताकि उनके मन में माता पार्वती के प्रति प्रेम की भावना विकसित हो। इससे शिव की तपस्या टूट जाती है और वे क्रोध में अपना तीसरा नेत्र खोल देते हैं। इससे कामदेव जल जाते हैं।

तपस्या भंग होने के बाद वे खुद को माता पार्वती की ओर आकर्षित पाते हैं। जब इंद्र और अन्य देवता भगवान शिव को अपनी समस्या बताते हैं। उसके बाद भगवान शिव माता पार्वती के प्रेम की परीक्षा लेते हैं, माता पार्वती के द्वारा की गई तपस्या के बाद शुभ मुहूर्त को देखते हुए भगवान शिव और पार्वती का विवाह किया जाता है। और उसके बाद कार्तिकेय का जन्म होता हैऔर फिर कार्तिकेय तारकासुर का वध करके सभी देवताओं को उनका स्थान फिर से वापस दिलाते हैं। ऐसी मान्यता है कि कार्तिकेय जा जन्म षष्ठी तिथि के दिन हुआ था इसलिए षष्ठी तिथि दिन कार्तिकेय जी की पूजा का प्रावधान हैं।

pdfinbox.com